''गऊ रक्षा और हिन्दुस्तानी मुसलमान''

मौलाना अब्दुल करीम पारेख का भाषण

नागपुर में 1977 ई. में आयोजित उच्च स्तरिय कांफ्रेंस जिसमें आर.एस.एस के लीडर, हिन्दू मार्गदर्शक, गऊ–रक्षा समिति, जैन महामंडल, सनातनी धर्मी, वैदिक धर्म और गीता मंदिर जैसी संस्थाओं के जिम्मेदारों ने मौलाना को प्रमुख वक्ता की हैसियत से 'गाय की हिफाजत' के सिलसिले में अपने विचार प्रकट करने का आमंत्रण दिया गया था।

और हिन्दुस्तानी मुसलमान

मौलाना अब्दुलकरीम पारेख
(नागपुर)

पैग़म्बर साहब का फ़रमान

एक व्यक्ति ने सवाल किया :

''ऐ अल्लाह के रसूल अपनों और गैरों में भेद भाव करने वाला कौन'' ?

हज़रत पैग़म्बर साहब ने जवाब दिया कि :

''आदमी ज़ुल्म व अत्याचार के मामले में अपनी क़ौम का साथ दे वह (इन्सानों में) भेद भाव बरतने वाला माना जाएगा।''

(मिश्कात)

प्रकाशक : फ़रीद बुक डिपो प्रा. ली. दिल्ली

प्रबंधक : अलहाज मौहम्मद नासीर खां

मुल्य :- 10.00

अनुक्रमिका (फ़हरिस्त)

''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम''

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयालु व मेहरबान है।

परिचय

सितम्बर 1977 में महाराष्ट्र के मशहूर शहर नागपूर में गाय की हिफाज़त के सिलसिले में एक उच्च स्तरिय कांफ्रेंस आयोजित हुई थी। इस विशेष कांफ्रेंस में हिन्दुस्तान की विख्यात हिन्दु हस्तियाँ मौजूद थीं। ***आर.एस.एस.*** के स्थानीय एवं केंद्रीय लीडर, सामाजिक संस्थाओं के ज़िम्मेदार कार्यकर्ता, विशिष्ठ गैर मुस्लिम बुद्धिजीवी और हिन्दु मज़हबी मार्गदर्शक और दूसरे चोटी के लोग शामिल थे। इन के अलावा ***गऊ रक्षा समिती***, ***'जैन महामंडल'***, ***'मारवाड़ी रीलीफ सोसायटी***, ***'सनातनी धर्म' वैदिक धर्म***' और ***'गीता मंदिर'*** जैसी संस्थाओं के ज़िम्मेदार और मार्गदर्शक भी मौजूद थे। इस बड़ी कांफ्रेंस के ज़िम्मेदारों ने अलहाज मौलाना **अब्दुल करीम पारेख साहब** को ***'प्रमुख वक्ता'*** की हैसियत से बुलाया और उन्हें ***'गाय की हिफाज़त'*** के सिलसिले में अपने विचार प्रकट करने का आमंत्रण दिया।

मौलाना ने इस कांफ्रेंस में 45 मिनट भाषण दिया। भाषण बड़ा जंचा तुला, सतर्क और बड़ा सशक्त एवं प्रभाव शाली था जिसे बहुत पसंद किया गया। यह भाषण टेप–रिकार्डर द्वारा सुरक्षित कर के बाद में लिखा गया। यह भाषण मौलाना ने हम

को किताबी शक्ल में छापने के लिये पेश किया हम उनके बड़े शुक्रगुज़ार हैं और बड़ी खुशी के साथ इसे पाठकों की सेवा में पेश कर रहे हैं, इस दुआ के साथ कि खुदा मौलाना की इस खिदमत को कबूल फरमाए।

इंसान की किसी कोशिश व मेहनत के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वह गलतियों से पाक है। ***मोहतरम मौलाना*** की यह किताब भी एक इंसानी कोशिश है। इस के कुछ अंशों से मतभेद किया जा सकता है। विचार एवं चिंतन की दृष्टी से भी कुछ पहलू सुधार योग्य हो सकते हैं, लेकिन इस में कोइ शक नहीं कि कुल मिला कर यह एक अच्छे मक़सद के लिये सही रूख से कोशिश की गयी है। यह छोटी सी किताब अपने विषय पर बेहतर, स्वस्थ तामीरी और साहस पूर्ण कोशिश है जो सब भारत वासियों के लिए मार्ग दर्शक है।

उत्तरी भारत के इतिहास में गाय का मसला न जाने कब से विवाद और खींच तान का मुद्दा बना हुआ है। कहा जाता है कि यह खालिस ***'धार्मिक समस्या'*** है लेकिन अगर ज़रा गहरी नज़र से जायज़ा लिया जाए तो मालूम होगा कि यह समस्या ***धार्मिक*** कम, ***राजनितिक*** तथा ***आर्थिक*** ज्यादा है। असल हकीकत यह है कि राजनितिक खिलाड़ियों ने बडी होशियारी और चालाकी से अपने हितों के लिये इसे 'ज़रिया' बनाया है और हमेशा राजनितिक शोषण के लिये इसे कामयाब

हथियार बनाया गया है। आदरणीय ***मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब*** ने जिस प्रकार इस मामले पर रौशनी डाली है और इसे सुलझाने के लिये जिन जिन उपायों की ओर इशारे किये हैं उन से दिन के उजाले की तरह यह हकीक़त सामने आ जाती है कि मसले की ***धार्मिक हैसियत*** क्या है और खुद हिन्दु धर्म के मानने वालों का निजी कर्तव्य इस सिलसिले में क्या है।

हम यह नहीं कहते कि श्रीमान ***पारेख साहब*** की यह कोशिश इस विषय पर अंतिम प्रयास है और न उन्होंने ऐसा दावा किया है, अलबत्ता यह ज़रूर है कि विषय के हिसाब से यह अपने अंदाज़ की एक अनोखी और रचनात्मक कोशिश है। ***मौलाना साहब*** ने कुछ बड़े ही अच्छे पहलुओं को उजागर किया है। बहुत से बुनियादी सवाल उठाये हैं और कुछ बहुत अच्छे इशारे व उपाय पेश किए हैं। इन्सानियत का भला चाहने वाले, मुल्क के दोस्त और हिन्दु धर्म के नेक नियत दानिश्वर अगर गम्भीरता से इस मसले को हल करना चाहें तो यह किताब समस्या के हल की ओर एक अच्छी कोशिश बन सकती है। मज़हब के सही अनुसरण की भावना रखने वाले ***धार्मिक मार्गदर्शकों***, देश के ***व्यवस्थापकों*** और ***दानिश्वरों*** का फर्ज है कि वे बड़ी गम्भीरता व ठण्डे दिल के साथ इस मसले को समझें सियासी और आर्थिक हितों के लिये धर्म को कभी इस्तेमाल न होने दें और राजनितिक बाज़ीगरों के सियासी शोषण से अपने आप को सुरक्षित रखें।

मसल (समस्या) के व्यवहारिक हल के लिए ***मौलाना साहब*** ने जिन विशेष प्रयासों की ओर ध्यान दिलाया है उन पर गम्भीरता और खुले दिल के साथ गौर करने की ज़रूरत है। हमारा यह देश विभिन्न धर्मों का संगम है। ***उदारता, सब्र, सहन शक्ति, खुले दिल*** और ***गहरी नज़र*** और ***हक*** को मानने के लिये दिल के दरवाजों को खुला रखे बिना न हम अपने मज़हब का सम्मान कर सकते हैं, न दूसरे मज़हब के मानने वालों के साथ वह इंसाफ बरत सकते हैं, जो खुद हमारे मज़हब का तकाज़ा है और न हम अपनी कौम की तरक्की और कामयाबी में मददगार बन सकते हैं। आपसी भाईचारा, आपसी भलाई और आपसी इंसाफ के बगैर हमारे मुल्क में वह माहौल कभी भी पैदा नहीं हो सकता जो इस मुल्क को आगे बढ़ाने और दूसरों को प्रेरित करने के लिये अनुकूल हो। जो लोग समस्याओं को गलत रूख देकर मतभेदों को हवा देते हैं और इस मुल्क में रहने वाले मज़हबी गिरोहों को आपस में लड़ता हुआ देखने में खुशी महसूस करते हैं, वे कभी भी देश के हितैषी नहीं रहे। वे नादान अपना ही घर जला कर हाथ तापते हैं और उन्हें एहसास नहीं होता कि वे खुद अपने हाथों अपना घर जला रहे हैं।

हम बड़ी ही अच्छी भावना और हिम्मत बढ़ाने वाली भावनाओं के साथ इस किताब को आपकी सेवा में पेश कर रहे हैं और शुक्र व-खुशी के साथ अल्लाह से दुआ करते हैं कि ***जनाब अब्दुल करीम पारेख साहब के इस परिश्रम को कबूल***

फ़रमाए, उन की इस कोशिश को दुनिया और आखिरत (परलोक) की कामयाबी का ज़रिया बनाए और उन सब को भी अज्र-व-इनाम में शरीक फ़रमाए जो इस की तैयारी में किसी भी हैसियत से मददगार हुए और दुआ करते हैं कि ***''संसार का पालनहार'' हमारे देश व देशवासियों को हर प्रकार के उपद्रव व फसाद से अपनी सुरक्षा में रखे और भारतीय व्यक्तियों के लिये इस मुल्क में इज्जत व अज़मत की जिन्दगी गुज़ारने की राहें खोल दे।***

मौलाना का यह भाषण वैसे भारत के कई बड़े बड़े शहरों में छप चुका है और इस भाषण का ऊर्दू, अंग्रेज़ी, मराठी, गुजराती में अनुवाद हो चुका है।

हमने मौलाना साहब के इस भाषण को सरल हिन्दी में मौलाना ही की शैली में छापने की कोशिश की है जो आपके हाथों में है आशा है कि पाठक गण इस से लाभ उठाकर भारत की धर्म निर्पेक्ष छबी को मानव जाती से मुहब्बत के दायरे में देखने दिखाने का प्रयत्न करेंगे।

शाहिद हुसैन
जिया पब्लिकेशन्स टैगोर मार्ग
लखनऊ - *226 007* (यू.पी.)

''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम''

प्रिय बंधुओ ! मुझे इस ***कांफ्रेंस*** में जो ***'गाय की रक्षा'*** के लिये आयोजित की गयी है, मेरे हिन्दु भाईयों ने बुलाकर मुझ पर बड़ा एहसान किया और अपने एक मुसलमान भाई पर भरोसा करके सब से पहले मेरे भाषण का एलान किया। इस पर ***अल्लाह से मेरी दुआ है कि इस मसले में गलत जानकारी के बजाए, गाय की हिफ़ाज़त के लिये असल और सही मालूमात की ओर हमारी रहनुमाई फरमाए।*** हकीकत यह है कि खुदा की मदद और हिदायत (मार्ग दर्शन) के बिना हम किसी बात के सही रूख पर नहीं पहुंच सकते। जब हम अपने मालिक से किसी भी काम में मदद चाहते हैं तो वह काम बड़ी आसानी से हो जाता है। ***इस लिये मैं आपके और अपने पैदा करने वाले से दुआ करता हूँ कि वह मुझे ठीक ठीक बात करने की तौफीक़ (साहस) प्रदान करे और हमारे दिलों में सच्चाई को क़बूल करने की योग्यता पैदा करे, आमीन।***

गऊ हत्या नहीं, गऊ रक्षा

मेरे भाईयो ! आज की सभा में ***''गऊ हत्या''*** और ***''गऊ रक्षा''*** दोनों बातों पर बहस होगी लेकिन मैं चाहूंगा कि हम सब दिल की गहराई से इस मसले पर सोच विचार करें। अगर हम संजीदा इल्मी अंदाज में गौर करें तो हमें मानना पड़ेगा कि ***''गऊ हत्या''*** व ***''गऊ रक्षा''*** दोनों में बड़ा फर्क है। जहाँ तक इस्लाम धर्म का संबंध है, वह किसी जानवर को बिना ज़रूरत क़त्ल

करने की इजाज़त ही नहीं देता। ***खुदा*** के ***आखिरी पैगम्बर, हज़रत मोहम्मद*** (उन पर अल्लाह की रहमत व सलामती हो) की ***'हदीसों'*** (प्रवचनों) में छोटे परिंदों के घोंसलों को उजाड़ने की भी सख्त मनाही है। यहाँ तक कि परिंदों को पिंजरों में क़ैद रखना और जानवरों को आपस में लड़ा कर तमाशा देखना भी अच्छा नहीं समझा गया है। ***'कुरआन पाक'*** में किसी जान (जीव) को नाहक़ क़त्ल करने से मना फ़रमाया है। यही वजह है कि ***'गऊ हत्या'*** के शब्द से एक मुसलमान को बड़ी हैरत और ताज्जुब होने लगता है और हमारे हिन्दु भाईयों को भी अनजाने में बड़ी ग़लत फ़हमी हो जाती है। इस लिये बड़े अदब के साथ मेरी यह गुज़ारिश है कि इस मसले को ***''गऊ रक्षा''*** कहना अधिक उचित होगा। ***'गऊ हत्या'*** के शब्द (अर्थात गाय का क़त्ल) जब हम बोलते हैं तो गाय का गोश्त खाने खिलाने वालों की एक भयानक तस्वीर हमारे सामने आ जाती है जो हमारे दिल व दिमाग में नफ़रत व घृणा पैदा करती है, लेकिन अगर हम गाय की रक्षा का शब्द इस्तेमाल करें तो इस काम में वे लोग भी हमारे साथ आना शुरू होंगे जो गाय का गोश्त किसी ज़रूरत या इजाज़त की वजह से खाते खिलाते हैं और हम अपने उन भाईयों के सहयोग से इस सफर की बहुत सी मंज़िलें आसानी से तय कर सकेंगे। उम्मीद है मेरी इस गुज़ारिश को क़बूल किया जाएगा ताकि हमारे साथ चलने वालों की संख्या बढ़ सके।

समस्या (मसले) का संबंध केवल मुसलमानों से नहीं है।

मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मेरी इस गुज़ारिश को क़बूल फ़रमाकर खुशी प्रकट की, इसलिये मैं बड़ी खुशी के साथ आज के अपने इस भाषण में *'गऊ रक्षा'* का शब्द इस्तेमाल करूंगा। गऊ रक्षा एक ऐसी समस्या है जिस पर बड़े ही ठण्डे दिमाग और पूरी सूझ बूझ के साथ ग़ौर किया जाना चाहिए। इस समस्या का संबंध केवल मुस्लिम समाज से नहीं बल्कि हिन्दु भाईयों और उन की धार्मिक भावनाओं से भी इस का बड़ा गहरा संबंध है और इस के साथ ही हमारे मुल्क की बहुत सी छोटी बड़ी ***इकाईयाँ, समाज, बिरादरियाँ*** और खुद ***हमारी सरकार*** और उस की ***प्रशासनिक मशीनरी*** भी इस मसले से जुड़ी हुई है।

अजीब मामला

लेकिन इस खुली हकीकत के बावजूद अजीब मामला है कि जब भी गाय के बारे में कोई बात होती है तो आरोप केवल मुसलमानों के सिर आता है और अनजाने में हमारे जो भाई गाय के सिलसिले में केवल मुसलमानों के बारे में नफ़रत पैदा करने का गुनाह मोल लेते हैं और शांतिप्रिय हिन्दु भाईयों को गुस्सा दिलाते हैं, मेरे ख्याल में उन का यह तरीक़ा चिंता का विषय है।

ऐसे लोग हमारे देश की हिन्दु धर्म मानने वाली जनता को गलत ढंग से सोचने का आदी बना देते हैं। फिर ये लोग गाय के मसले से और इस्लामी अक़ीदे से भी अपरिचित होते हैं तो दूसरी ओर इस महान देश में रहने बसने वाली विभिन्न क़ौमों और नस्लों के हालात, धार्मिक विश्वास और यहाँ की हुकूमत के प्रशासनिक मामलों तथा खुराक के मसले से भी अनजान होते है। अब समय आ गया है कि अनाड़ियों और गैर अनुभवी लोगों के हाथों से इस मामले को निकाल लिया जाए और गहरी सूझ बूझ और फ़िक्र रखने वाले दानिश्वर (बुध्दी जीवी) लोग इस मसले को अपने हाथों में लेकर आगे आएं और इसका हल तलाश करें। नफ़रत या घृणा की बजाय ठण्डे दिल से फैसला करने से यह काम हो तो बहुत जल्द किसी बेहतर नतीजे तक पहुंचा जा सकता है।

गाय का गोश्त खाने की 'इजाज़त' है, न कि 'हुक्म'

इस्लाम और मुसलमानों के ताल्लुक से मैं आपको यह बात बता दूं कि पवित्र कुरआन की इजाज़त के मुताबिक मुसलमान जिन जानवरों का गोश्त खा सकता है उस में गाय भी शामिल है मगर यह बात भी स्पष्ट करता चलूं कि गाय के गोश्त का इस्तेमाल ***'जायज़'*** है, ***'फर्ज़'*** नही कि हर मुसलमान को इसे खाना ही पड़े ऐसा नहीं बल्कि इसके खाने की छूट है और ये खाने वाले की ज़रूरत पर निर्भर है। आज भी मुसलमानों

के बहुत से पढ़े लिखे लोग, ***प्रोफेसर, इंजीनियर, पत्रकार और खुशहाल लोग, डॉक्टर, वकील, व्यापारी*** तथा ऐसे लोग जिनका ***हाज़मा*** कमज़ोर होता है, वे शयद ही गाय का गोश्त इस्तेमाल करते हों मगर हमारे जो गरीब भाई हैं, जिन्हें दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती या जिनकी आमदनी कम है, वे अपनी ज़रूरत के तहत पेट भरने के लिये 'इस्लाम' की दी हुई इजाज़त से ज़रूर फायदा उठाते हैं। इस तरह के लोगों को भी उन की ज़रूरत को सामने रखते हुए हमदर्दी और इंसानी भाईचारे को बुनियाद बनाकर आसानी से मनाया और समझाया जा सकता है कि वे अपने इस हक़ को छोड़ने पर राज़ी हो जाएं, लेकिन बहर हाल इंसानी हमदर्दी और मसले के हल के लिये उन की खुराक समस्या के नुकसान की भरपाई का हमें उचित बंदोबस्त करना होगा ! साथ ही हमें उनकी मज़हबी श्रद्धा का भी सम्मान करना होगा।

मुसलमानों के दिल का दुःख

इस मौके पर मैं चाहूंगा कि मुसलमानों की भावनाओ एवं एहसासों और उन के दिल में बसी हुई तथा छिपी हुई एक बात की खबर आपको दूँ, जो उन्हें ठेस पहुंचाती हैं और उन के दिलों को दुःखी करती हैं, वह यह कि जब कभी भी गाय का मसला उठाया जाता है तो सब को छोड़ कर केवल मुसलमानों को निशाना बनाया जाता है जबकि मुसलमानों से कई गुना

संख्या में दूसरी कौमों के करोड़ों लोग गाय का गोश्त खाने खिलाने में बहुत बड़े ***भागीदार*** और ***शामिल*** हैं, जैसे ***बौध्द धर्म*** के लोग, हमारे ***हरीजन*** भाई, ***ईसाई मज़हब*** के लोग तथा ***पारसी*** लोग। इन के अलावा ***दक्षिणी भारत*** के लोग जिन में खुद 'हिन्दु' करोड़ों की संख्या में गाय का गोश्त खाते और खिलाते हैं। फिर ***'कौरकु' 'भील' 'भंगी', चमार व गोंड, जंगली कबीले, नागा लोग*** और ***नेपाली गोरखे*** भी गाय का गोश्त खुले आम इस्तेमाल करते हैं। ***सर्कस वाले*** अपने जानवरों को गाय का गोश्त ही खिलाते हैं। मुसलमान लोग जितना गोश्त खाते हैं उस का बीस गुना गोश्त तो यह सब दूसरे लोग ही खा जाते हैं। अब केवल मुसलमान का नाम लेकर गाय की हिफ़ाज़त का मसला बहस के लिये लाया जाए तो मुसलमानों के दिल में दुःख व तकलीफ़ का पैदा होना कुदरती बात होगी और अगर मुसलमान गाय के गोश्त से अपना हक उठा लें तो क्या बाकी यह सब इकाईयाँ इस में हमारा सहयोग करेंगी ? इस ओर भी हमें ध्यान देना होगा। जब तक गोश्त खाने वाली सारी ***ज़ातें, धर्म*** और ***क़बीले*** हमारे साथ न होंगे तो केवल मुसलमानों के सहयोग से कुछ भी बात बन नहीं सकती। मुझे आप यह बताएं कि यह एहसास और ख्याल मुसलमानों के दिल में अगर पाया जाए तो क्या हम हक़ व इंसाफ के तराज़ू को सामने रख कर उसे बेवज़न करार दे सकते हैं ?

मांस व चमड़े के व्यापारी

हमारे इस मुल्क में और मुल्क के बाहर की मंडियों में हड्डियों का व्यापार और खास तौर से ज़िब्ह किये हुए जानवरों के चमड़े बहुत कीमती माने जाते हैं। इस के कारखाने, जूते की फैक्ट्रियाँ, जिस में कई लाख लोग काम करते हैं, जूते–चप्पल के उद्योग, 'बाटा' कम्पनी का देशव्यापी उद्योग तथा चमड़े की पेटियाँ, बक्से, बक्कल कमर पट्टे (बेल्ट), बटुवे और पाकिट, इन सभी चीजों के कारखाने चलाने वाले सारे के सारे मुसलमान नहीं हैं, बल्कि अधीकांश गैर मुस्लिम ही हैं। बड़े बड़े होटल जिन के चलाने में शायद सरकार भी भागीदार है, वहाँ बड़े पैमाने पर गाय का गोश्त पका कर बेचा और खिलाया जाता है। क्या यह सभी मुसलमान हैं ? हवाई जहाज़ के सफर में हवाई कम्पनियां यात्रीयों को गाय का गोश्त खिलाती हैं, मुल्क के अंदर उड़ान भरती हैं, तब भी और बादलों के बहुत ऊपर भी विमान परिचारिकाएं (*एयर होस्टेस*) हिन्दुस्तानी और विदेशी मुसाफ़िरों को बड़े आदर से गाय का गोश्त खिलाती हैं और यह सभी लड़कियाँ मुस्लिम नहीं होतीं। यह भी बताया जाता है कि गाय का गोश्त भारत से 'एक्सपोर्ट' होकर दूसरे मुल्कों में भेजा जाता है और मेरी जानकारी के अनुसार इस कारोबार में हिन्दु

भाई (चेन्नई और मुम्बई में) इस व्यापार (EXPORT OF BEEF) से लाखों करोड़ों रूपये कमा लेते हैं। फिर देश के सरकारी मेहमानों को गाय का गोश्त पेश करने वाले क्यों छोड़े जाएं, जो गाय का गोश्त खिलाने में भागीदार हैं। ज़ाहिर है यह काम भी मुसलमान नहीं करते। इन पायेदार व ठोस हक़ीकतों की मौजूदगी में क्या केवल मुसलमानों के सहयोग से यह समस्या हल हो सकेगी ? और क्या गाय की रक्षा के सिलसिले में सिर्फ मुसलमानों को ही सामने रखना उचित होगा ?

गाभन गाय का पेट चाक करना पाप है

मेरे दोस्त, गीता मंदिर के स्वामी जी, ***पंडित दर्शनानन्द जी***, जिन की अध्यक्षता में आज की यह सभा हो रही है और इस समय इस सभा में मौजूद हैं, ने मुझे बताया कि हमारे इस मुल्क में गाभन गाय, जिसके पेट में बच्चा होता है, उस ज़िन्दा गाभन गाय के पेट में औज़ार मारकर ज़िन्दा बच्चा निकाल कर खौलते पानी में डाल कर उसे ज़िन्दा उबाल कर उस का चमड़ा हासिल कर के कई कई हजार की रकम कमाई जाती है। यह काम भी मुसलमान बिल्कुल नहीं कर सकता क्योंकि इस्लाम धर्म ने तो इस तरह की दरिन्दगी, निर्दयता और निर्दोष जानवर की ऐसी मौत को पूरी तरह हराम कर दिया है जबकि

हमारे दूसरे भारतीय भाई इस तरह के निर्दयी काम करके अपनी तिजोरियाँ भर रहे हैं। इसी प्रकार *'कॉफ लेदर'* (CALF LEATHER) जो बछड़े का चमड़ा है और भारी कीमत में अमरीका भेजा जाता है, इस कारोबार में आप को एक भी मुसलमान नहीं मिलेगा। अब रहा गोश्त इस्तेमाल करने का मामला तो मुसलमान सिर्फ उन जानवरों का गोश्त इस्तेमाल करता है जो हलाल और जायज़ हैं। आप के सामने *'कुरआन'* की एक ***आयत*** पढ़ कर सुनाता हूँ जिस से आप को सही अंदाज़ा होगा कि मुसलमान को गोश्त खाने के सिलसिले में किन किन बातों का ख्याल रखना ज़रूरी होता है :

''तुम पर हराम कर दिया गया है मरा हुआ जानवर, खून और सुअर का गोश्त भी हराम कर दिया गया है और जिस जानवर पर अल्लाह के अलावा किसी दूसरे का नाम पुकारा गया हो वह भी हराम है और जो जानवर गला घोंट कर मार दिया जाए वह भी तुम नहीं खा सकते और जो चोट लगकर मर गया हो वह भी नहीं खा सकते और जो ऊपर से गिरकर मर गया हो या सींग मारने से मर गया हो, ये सब हराम हैं और जंगली दरिंदों ने जिस जानवर को फाड़ खाया हो वह भी हराम हैं।'' (*5*: अल–मायदा–*3*)

मुसलमान हलाल गोश्त ही खा सकता है

कुरआन के इस हुक्म ने आज के *'**मशीनी क़त्ल**'* के उन तमाम जानवरों को भी हराम कर दिया जिन को मशीन के ज़रिये कत्ल किया जाता है। आप को सुन कर हैरत होगी कि **मशीनी** क़त्ल के जानवरों का गोश्त मुसलमान हरगिज़ नहीं खाता, फिर यह कौन लोग हैं जो यह गोश्त खा जाते हैं ? उन को इस मसले से जुड़ा हुआ समझना चाहिये तथा उन्हें भी इस के हल के लिये आवाज़ देनी चाहिये।

पवित्र कुरआन की सूरह *(6)* ***अनआम*** की आयत 144 एवं 145 में भेड़, बकरी, ऊंट और गाय, इन चारों जानवरों के नर व मादा को हलाल तरीके से खाने की इजाज़त दी गयी है। कोई भी मुसलमान, इस्लाम के तरीके के मुताबिक हलाल किये बिना, जानवर नहीं खा सकता मैं आप को बता दूं कि जानवरों को पवित्र ***काबा*** की ओर मुंह करके लिटाना, उस पर ***बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर*** कहना अर्थात इस संसार के मालिक का नाम पुकारना और कहने वाले का मुसलमान होना भी ज़रूरी है। अगर कोई गैर मुस्लिम ज़िब्ह करेगा तब भी मुसलमान को यह जानवर खाना हराम होगा। फिर ज़िब्ह का तरीका भी ऐसा कि जानवर को कम से कम तकलीफ़ हो। किसी गैर इस्लामी तरीके से जानवर को तड़पा कर और देर तक तकलीफ़ देने वाले किसी भी तरह के झटके का इस्तेमाल मुसलमान के लिये मना है। अब यह समझने में परेशानी नहीं होगी कि इस्लाम में गोश्त खाने की बहुत सी शर्तें हैं।

इन शर्तों को पूरा किये बिना किसी जानवर का गोश्त खाना **जायज़** नहीं। क्या मुसलमान के अलावा दूसरी गोश्त खाने वाली क़ौमें अपने ऊपर इतनी पाबंदियाँ मानती हैं? अगर कोई इन पाबंदियों की परवाह किये बिना गोश्त खाता है तो अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि हराम व हलाल में इतना ही फ़र्क है जितना ***'बदकारी'*** और ***'निकाह'*** (विवाह पद्धति) में फ़र्क होता है। जिस प्रकार एक व्यक्ति किसी बाज़ारी औरत से ज़िना करता है, अर्थात अवैध रूप से संभोग (SEX) की ज़रूरत पूरी करता है, क्या उसे बदकार नहीं कहते? ज़ाहिर है यह बदचलन आदमी और निकाह करने वाला दोनों एक ही काम करते हैं लेकिन एक का काम गुनाह और दूसरे का काम जायज़ है और सिर्फ जायज़ ही नहीं बल्कि समाज की मांग के ठीक मुताबिक है। इसी तरह जो लोग क़ायदे की पांबदी किये बगैर अंधाधुंद गोश्त खोरी करते हैं और जो लोग क़ायदे की पाबंदी के साथ अपनी ज़रूरत पूरी करते हैं और गोश्त का इस्तेमाल करते हैं, दोनों को कानून और मज़हब की निगाह में अलग अलग दर्जा दिया जाना चाहिये। इंसाफ की बात तो यह है कि इस मसले में हर पहलू पर ग़ौर करने के बाद ही कोई ज़िम्मेदारी की बात कहनी चाहिये। बे वज़न और अनुचित बातों से दिल फटते हैं और सुलझने वाला मसला हो तो भी उलझन और मतभेद की भेंट चढ़ जाता है।

हम सब को मालूम होना चाहिये कि मुसलमान को केवल वही गोश्त खाना **जायज़** है जो हलाल तरीके से हासिल किया हुआ हो और जो इजाज़त दिये हुए जानवर का गोश्त हो। हर

तरह के हलाल और हराम जानवर और बिना किसी पाबंदी के हर एक जानवर को क़ायदे और विधान के बगैर जैसा मौका हो खा जाना या मवेशी क़त्ल खानों में काटे हुए जानवर को खाना जो लोग पसंद करते हैं, उन पर आपत्ती करने वाला मैं कौन होता हूँ ? अलबत्ता मैं यह ज़रूर बताना चाहूंगा कि यह मान लेना कि केवल मुसलमान ही गोश्त खाने वाले हैं और गाय के गोश्त का इस्तेमाल भी सिर्फ मुसलमान ही करता है, सही नहीं है। इस तरह हम सब इस मसले में गलत राह पर लग जाएंगे और इसके बाद किसी बुनियाद पर सोच विचार करना एक बेकार और बे मक़सद काम होगा।

मुसलमानों के दुःख को समझने की कोशिश की जाए

हमारे हिन्दु भाईयों में जो लोग गाय के आदर, सम्मान और पवित्रता के इच्छुक हैं, उन की सेवा में बड़ी हमदर्दी और आदर के साथ निवेदन है कि आप अहिंसा पर विश्वास रखते हैं, आप दयालु हैं बल्कि अपनी धार्मिक श्रध्दा के अनुसार सांप को दूध पिलाते हैं। क्या आप मुसलमानों के साथ इस मामले में इस बात से सहमत न होंगे कि मुसलमानों का जितना संबंध गाय के गोश्त से समझा जाता है उस से बीस गुना संबंध दूसरी क़ौमों का इस मसले से जुड़ा हुआ है ? अब मुसलमान जब यह बात सुनता व पढ़ता है कि गाय के बारे में सिर्फ मेरी ओर उंगली

उठाई जाती है तो स्वभाविक रूप से उस का दिल दुखी होता है। उम्मीद है कि मेरे हिन्दु भाई अपने मुसलमान भाई की छिपी हुई इस तकलीफ़ का ज़रूर एहसास करेंगे कि हमारी तरफ़ केवल इतना ही इशारा किया जाए जितना कि हमारा इस से संबन्ध है बाकी दूसरी अनगिनत बातें जो गाय से संबंधित हैं, उन का हमसे कोई लेना देना नहीं, बल्कि इस मसले का हल मुसलमानों के सिवा दूसरी बहुत सी कौमों से विचार–विमर्श और फैसलों के बाद ही मुमकिन हो सकता है। सिर्फ मुसलमानों के लाख सहयोग के बाद भी मसला ज्यों का त्यों ही रहेगा, जैसा कि अब तक रहा है।

मुसलमान आलिमों ने अब तक इस मामले में हमेशा हमदर्दी का तरीक़ा अपनाया है। वे आप की धार्मिक भावनाओं का पूरा पूरा लिहाज़ करते हैं और इंसाफ व गम्भीरता के साथ आप का दुःख दर्द महसूस करते हैं। हमारे मज़हबी आलिमों ने अखिल भारतीय स्तर पर हमेशा हिन्दु भाईयों के नाजुक एहसासों को सामने रख कर सोचा है और बड़ी सावधानी के साथ इस मसले में हर समय हिन्दु भाईयों की धार्मिक भावनाओं का सम्मान किया है और कभी भी इस मामले में उलझाव डालने की कोई गलत कोशिश नहीं की है, अलबत्ता राजनितिक लोग इस मामले को अपने तौर पर उछाल कर एक लम्बे समय से अपना करतब दिखाते आ रहे हैं। लेकिन समझदार मुस्लिम धार्मिक नेताओं ने उन्हें कभी कोई महत्व नहीं दिया और आप भी उन्हें महत्व न दें, अलबत्ता इस मामले में हमारे ज़िम्मेदार

रहनुमाओं, दीनी व मज़हबी ज्ञान की महारत और समझ रखने वाले आलिमों से संपर्क करें, जैसे ***'मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड'***, जिस के ज़िम्मेदार हैं, अमीरेशरीअ़त बिहार व उड़ीसा, जनाब ***मौलाना मिन्नतुल्लाह रहमानी सा.*** कुलहिन्द मजलिसे मुशावरत के अध्यक्ष, ***मुफ़्ती अतीक़ुर्रहमान उस्मानी साहब, 'नदवतुल उलेमा'*** के ***व्यवस्थापक***, हजरत मौलाना ***अबुल हसन अली नदवी,*** जो ***'पयामे इंसानियत'*** यानी मानवता संदेश के प्रचारक तथा एक विश्व विख्यात व्यक्ति हैं। इन के अलावा ***'मदरसा दारूल उलूम देवबंद'*** जो मुल्क की एक महान मज़हबी विद्यापीठ है, उस के निरिक्षक, हज़रत मौलाना ***क़ारी मोहम्मद तय्यब साहब*** हैं और ***'जमी-अ-तुल उलेमाए हिन्द'*** के ***मौलाना मोहम्मद असद मदनी साहब***, ये सभी लोग अपने अपने विचार पेश कर चुके हैं और हिन्दु भाईयों के संवेदन शील (SENSITIVE) एहसासों का ख्याल रखते हुए कभी भी इन्होंने कोई गलत कार्यवाई करने की कोशिश नहीं की और न कभी कोई उलझन पैदा की, न किसी का दिल दुखा कर इन लोगों ने कभी कोई बात कही अगर आप मुसलमानों में कुचले हुए ग़रीब लोगों को गाय बैल के गोश्त के बदल के तौर पर किसी अन्य प्रबंध की ओर पहल का कोई हल लेकर इन ज़िम्मेदार लोगों तक अपनी बात पहुचाएँ तो समस्या की सारी गुत्थियाँ सुलझ जाएंगी और हमारे हिन्दु भाई ज़रूर अपने मुस्लिम देशवासियों से मुहब्बत, प्यार और सम्मान का तोहफा हासिल करने में सफल होंगे।

मज़हब दिलों को जोड़ने वाली ताक़त है

हकीकत यह है कि मज़हब दिलों को जोड़ने वाली ताकत है। दिलों को तोड़ना इंसानी बिरादरी में नफ़रत, खिंचाव और तनाव पैदा करना मज़हब व धर्म का मकसद कभी नहीं हो सकता। मुसलमानों के दीनी ज़िम्मेदार और रूहानी पेशवा लोग जिन के नाम मैं ने आप को बताए हैं, ये सब मेरे बुज़ुर्ग हैं और इन्हें मैं बहुत करीब से जानता हूँ, ये सारे मुस्लिम रहबर आप के लिये हर तरह इस मामले के सारे पहलुओं में सहायक सिद्ध होंगे। मगर यह हकीक़त हर अवसर पर ज़रूर नज़र में रहनी चाहिये कि मुसलमानों को ही इस देश में ***अकेले गऊ हत्या*** का जिम्मेदार न माना जाए बल्कि सभी संबंधित गिरोह भी बहस के दौरान सामने लाए जायें ताकि सब के सहयोग से कोई अमली (व्यवहारिक) शक्ल बन सके और इस समस्या के हल की ओर हक़ीक़त में गम्भीरता से कोई कदम उठाया जा सके।

सोचने के लिये कुछ नई दिशाएं

आज के इस विशेष व प्रतिष्ठित सम्मेलन में आने से पहले मुझे यह सुन कर बड़ा दुख हुआ कि सरकार के उच्च स्तरीय लोग और राजनितिक पार्टीयाँ, गाय के मसले में मुसलमानों का नाम उछाल कर ग़लत ढंग से उलझन पैदा करना चाहती हैं और हिन्दु भाईयों को यह कह कर भड़काते हैं कि मुसलमान ही गाय की हिफाज़त का बुनियादी पत्थर है जो रास्ते की बड़ी

रूकावट है। सोचने का ऐसा ढंग न सिर्फ यह कि मसले का कोई उचित और सही हल नहीं है बल्कि यह राजनितिक बाज़ीगरी, हक़ीक़त में देश और यहाँ के नागरिकों के साथ अन्याय व ज़्यादती है। लेकिन मुझे अब यह उम्मीद हो चली है कि अल्लाह ने चाहा तो मेरे आज के इस भाषण से आप सब को सोचने के लिए कुछ नई दिशाएं तथा इशारे मिलेंगे जिस को बुनियाद बनाकर इस महत्वपुर्ण कांफ्रेंस में ***दानिश्वरों*** को, ***हुकूमत*** के ज़िम्मेदारों को और ***राजनितिक*** पार्टीयों के साथ ***सामाजिक*** कार्यकर्ताओं को फैसले करने में आसानी होगी। अब मेरी कुछ बातें इस बारे में बतौर सलाह के गौर करने के लिये सामने रखी जाएं तो शुक्र गुज़ार रहूंगा। मुझे पूरी पूरी उम्मीद है कि ये सारे मश्वरे हमारे अगले प्रोग्राम में बराबर हमें इस समस्या का सही रूख बताते रहेंगे और हम समस्या का सही हल तलाश करने में आगे बढ़ सकेंगे।

गऊ रक्षा के मसले में मुसलमानों का सहयोग

(1) ***'गऊ हत्या'*** और ***'गऊ रक्षा'*** दोनों बातें अलग अलग हैं और दोनों को अलग अलग रख कर ही गौर किया जाना चाहिये। बेज़रूरत, बे मक़सद और बे फायदा किसी जानवर को क़त्ल करना इस्लाम धर्म में बिल्कुल जायज़ नहीं है। जिस की वजह से गऊ हत्या से मुसलमानों का सिरे से कुछ संबध ही नहीं

बनता। इस लिये इस रूख पर सोचते समय मुसलमानों का नाम हिन्दु भाईयों के साथ सहयोग व मदद के लिये तो ज़रूर लिया जाए लेकिन किसी ***फ़रीक*** (दल या प्रतिद्वंदी) की हैसियत से कभी न लिया जाए। रहा सवाल ***गऊ रक्षा*** का तो इस सिलसिले में मुसलमानों का सहयोग ज़रूर प्राप्त किया जाए और हिन्दु भाईयों की धार्मिक रूचि एवं भावनाओं की तरफ़दारी के लिये मुसलमानों को भी आगे आकर सोच विचार में भरपूर हिस्सा लेना चाहिये। इस मक़सद के लिये मुसलमानों की ओर से मैं वायदा करता हूँ कि हम सलाह मश्वरे के लिये बुलाए जाने पर हाज़िर होंगे और अपना बेहतरीन सहयोग पेश करेंगे।

गऊ रक्षा के सिलसिले में अन्य क़ौमों का सहयोग

(2) इस मसले पर ***बौध्द, हरीजन, ईसाई, मुसलमान, पारसी, साउथ इण्डियन, भील, कोरकु, माडिया, गोंड, गोरखे आदिवासी नेपाली गोरखे, नागा कबाईल, चमार भंगी*** और दूसरे वह ***हिन्दु भाई*** और गरीब मज़दूर जो मजबूरी और दरिद्रता के कारण गाय का गोश्त खाते हैं, हवाई जहाज़ चलाने वाली देशी एवं विदेशी कम्पनियों के नुमाइन्दे और ***सर्कस*** कम्पनी के नुमाइन्दे जो इस मुल्क में अपने सैकड़ों पालतू मांसाहारी जानवरों को गाय का गोश्त अपने पैसे बचाने के लिये

खिलाते हैं और जूते चमड़े व हड्डी के कारखाने वाले, दूसरे कसाई बिरादरी के भाई जिन में हिन्दु क़ौम के लोग भी शामिल हैं तथा ***बाटा के जूते*** की फेक्ट्री, ***'कॉफ लेदर'*** के व्यापारी और उन के ***एजण्ट***, गाय का चमड़ा और उस के गोश्त को ***'एक्सपोर्ट'*** करने वाले कारखानेदार और उन में काम करने वाले मज़दूर संगठन (LABOUR UNION) के ज़िम्मेदार लोग, चमड़े की पेटियाँ, पॉकेट, बेल्ट, बटुए आदि बनाने वाले कारखानेदार और उनके एजण्ट व दलाल खरीदार तथा संबंधित व्यक्तियों के साथ सभी राज्य सरकारों के मुख्य मंत्रियों और सरकारी कारिंदे किसी एक जगह बैठ कर सोचें और इन्सानी हमदर्दी के साथ विचार करें। इन वर्गों में मुसलमानों की ओर से प्रतिनिधी के रूप में इस्लामी विद्वानों को भी सम्मिलित किया जाए ताकि हर वर्ग की यह प्रतिनिधी सभा, आम सहमति से किसी फैसले तक पहुंच सके।

मैं यक़ीन व निश्चिंतता के साथ कह सकता हूँ कि मुसलमान ऐसी किसी भी कांफ्रेंस में अपना भरपूर सहयोग दिल की गहराई और हमदर्दी से पेश करने और धार्मिक उदारता का खुला सबूत देने में किसी से भी पिछे नहीं रहेंगे बल्कि आप चाहें तो ऐसी बुलाई जाने वाली कांफ्रेंस में मुसलमान सहायक व निमंत्रण कर्ता की हैसियत से शामिल होने में भी गर्व महसूस करेंगे और अपने हिन्दु भाईयों का दिल जीतने के लिये जो कुछ बन पड़ेगा करने के लिये हर समय तैयार हैं क्योंकि अच्छे काम में सहयोग का हमें कुरआन में हुक्म दिया गया है और कुरआनी हुक्म का आदेश पालन हमारे लिये अत्यंत ज़रूरी है।

नाकारा गायों का पालन पोषण

(3) जो लोग ***गऊ रक्षा*** के मामले में धार्मिक भावनाएं रखते हैं वे एक एक नाकारा गाय को, जो दूध नहीं देती, अपने घर पालने का संकल्प करें और यह शपथ लें कि वे किसी कीमत पर उसे न बेचेंगे ताकि नाकारा जानवर बिकना बंद हों। दुधारू जानवर बड़ा क़ीमती होता है। हर कोई उसे पालता है। सवाल है नाकारा गाय का जिसे उस समय तक नियमित खुराक देने कि बात है जब तक वह ज़िन्दा है और यह काम यानी गाय को खुराक देते रहना धार्मिक विश्वास के अनुसार केवल हमारे हिन्दु भाई ही कर सकते हैं यह उन्ही की धार्मिक ज़िम्मेदारी भी है। यह कुर्बानी बहर हाल उन्हें देनी ही होगी कि हर हिन्दु परिवार या हर हिन्दु भाई एक एक नाकारा गाय का पालन पोषण करे ताकि समस्या का एक अंश तो पूर्ण रूप से काबू में आ जाए।

'गाय मिनिस्ट्री' का प्रस्ताव

(4) इस समस्या को हल करने के लिये केंद्रीय शासन ***"गाय मिनिस्ट्री"*** की स्थापना करे और उस के अंतर्गत सलाहकार समिति बनाएं जिसमें उस के बारे में तमाम इकाईयों के प्रतिनिधी मिल जुल कर इस मसले का प्रभावी हल निकालें और आने वाली मुश्किलों पर काबू पाने की कोशिश करें और इस तरह इस मसले के बारे में सरकार भी अपनी जिम्मेदारी परी कर सके।

हुकूमत की न्यायिक ज़िम्मेदारी

(5) सब से पहले हुकूमत अपने मशीनी क़त्ल खाने फौरन बंद करे और अपने होटलों में गाय का गोश्त खिलाने पर पाबंदी लगाए। ***'काफ़ लेदर'*** (बछड़े का चमड़ा) एक्सपोर्ट न किया जाए। सरकार इस पर भी प्रतिबंध लगा दे। आज के शासक जब आम जनता में थे तब वो गाय की रक्षा पर बड़ी बड़ी बातें करते थे लेकिन अब सिर्फ मुसलमानों का नाम लेकर असल मसले के हल से लोगों का ध्यान हटाकर साम्प्रदायिक माहौल जो भी बनाएगा उसे पकड़ना चाहिये ताकि ना इन्साफी और झूठे आरोप के गुनाह से लोगों को रोका जा सके और भावुक उबाल और वक्ती शोर शराबे में इंसाफ की आवाज़ को बे असर बना देने में कोई बे रहम अपनी चालाकी से सफल न हो सके इस का हमें ख्याल रखना होगा।

मज़दूरों के मसले का हल

(6) जूते, चप्पल, बैग और चमडे आदि के क़ारखानों में जो मज़दूर काम करते हैं उन के हर्जाने पर गौर किया जाए और उन्हें दूसरा काम दिलाने के बारे में अभी से योजना बना ली जाए ताकि बीज के मुताबिक पेड़ की हम आशा कर सकें वर्ना सौ साल तक भी प्रतिक्षा करके हम किसी निर्णायक स्कीम तक कभी नहीं पहुंच सकेंगे। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ कि मज़दूर संगठनों के लीडरों का खुला सहयोग जब तक हमें नहीं मिल पाएगा ***गऊ रक्षा*** में हज़ारों अड़चनों का सामना होगा और हमारी सारी कोशिशें मुरझा कर निष्फल रह जाएगी।

छोटे जानवरों का गोश्त सस्ते दामों में उपलब्ध कराया जाए

(7) गोश्त खाने वाले गरीबों को छोटे जानवरों का गोश्त सस्ते दामों में मिलने की सुविधाएं दी जाएं और कोई कारगर कदम उठाया जाए। सरकार इस में पूरा सहयोग दे ताकि कसाई बिरादरी कोई दूसरा काम काज शुरू कर सके। इसी तरह खुराक के अकाल का सामना करने की नौबत न आएगी और कसाई बिरादरी के साथ साथ दूसरी इकाईयाँ भी अपनी आर्थिक बदहाली की शंका से निराशा का शिकार न हो कर हमारे साथ इस मसले में पूरा सहयोग दे सकेंगी।

हिंदुओं में मांस खाने की प्रवृत्ति को रोका जाए

(8) हिन्दु धार्मिक विद्वान आम हिन्दुओं में गोश्त खाने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को रोकें और अपनी धार्मिक प्रतिष्ठा और आदेश का इस्तेमाल करें ताकि जिन लोगों के लिये मांस खाना धार्मिक दृष्टीकोण से जायज़ है उन्हें छोटे जानवरों का गोश्त सस्ते दामों में हासिल करने में कोई कठिनाई न हो और गाय का गोश्त खाने की ज़रूरत ही बाक़ी न रहे।

बहकाने वाली सोच

(9) अभी तक इस मसले पर केवल मुसलमानों को सामने रख कर सोचा जाता रहा है इस लिये इस भटकाने वाली सोच के नतीजे में मुल्क में बहुत से बेगुनाहों के कत्ल हुए, नाहक उनके खून बहे, इन्सानों के हाथों ही इंसानियत क़ा कत्ल हुआ। लाखों, करोड़ों की जायदादें तबाह व बर्बाद हो गयीं, देश के नागरिकों के ज़रिये ही देश की ज़बर्दस्त दौलत बर्बाद हुई। गाँव और शहर भड़क उठे और आग के लावे अपनी हौलनाक गड़गड़ाहट के साथ बहने लगे कि हमारा समाज कई कई दिनों तक सनसनता रहा। अब ज़रूरी है कि मुल्क के दानिश्वर (बुद्धि जीवी) मिल जुल कर बैठें और वातावरण को ***विषैला*** होने से बचाएं। साम्प्रदायिकता के जुनून को इन्सानी खून के पवित्र और आदर योग्य छींटों का वास्ता देकर ठण्डा करें और यह इरादा करें कि मुल्क में आगे यह सब न होने दिया जाएगा और इंसानियत के खून से होली खेलने वालों को कभी माफ़ न किया जाए और बिधवाओं व यतीमों के आंसू भरे दामन की वीरानी का गुनाह कभी मोल न लिया जाए। इंसानियत का क़त्ल किसी भी तरह न होना चाहिये और इस रक्तपात व खून खराबे को बंद करके इंसानी हमदर्दी और खुराक की ज़रूरत को बुनियाद बनाकर फैसले किये जाएं। केवल जुनून से मसले का हल निकालने के सारे रास्ते आज तक बेफ़ायदा ही साबित

हुए हैं। इन रास्तों पर कभी न चला जाए बल्कि हम वह ***सीधा सच्चा*** और ***न्यायिक*** रास्ता अपनाएं कि दूसरे हमारे गले में फूल डालने और प्यार से हमारे गले से लिपट जाने के लिये तैयार हों। इस समस्या को हम लहू तरंग न बनने दें बल्कि इसे जलतरंग बना कर काम करें।

हिन्दु इकाईयों की ओर से गरीब फण्ड

(10) पिछड़े और कुचले हुए गरीब भूखे लोगों की खुराक गाय न बन सके इसलिये एक बड़ा फण्ड हिन्दु भाई अपनी इंसानी हमदर्दी के तहत खुद कायम करें और प्रभावित लोगों तक सहायता का हाथ बढ़ा कर रास्ता समतल करें ताकि कुचले हुए लोग भूखे न मरें और खान पान की ज़रूरत के तहत गाय का गोश्त खाने के लिये मजबूर न हों। हिन्दु मज़हब वाले हमारे भाई जैसे ***गुजराती, जैन, बनीया बिरादरी, ज़ौहरी, सुनार, किराड समाज, मारवाड़ी, बजाज और बिरला*** खानदान खुदा की मेहरबानी से बड़े मालदार हैं। वे इस बारे में कोई खास और प्रभावशाली आर्थिक क़दम उठाने में पहल करें। यह उन से मेरी बिरादराना दरख्वास्त (विनंती) है।

चमड़ा व्यापारियों पर पाबंदी

(11) चमड़े वाले व्यापारी और कारखाने के मालिकों ने मुझे बताया कि मुरदार जानवरों के चमड़े से बनने वाला माल खराब होता है और बाहर की मंडियों में केवल हलाल जानवरों के चमड़े का बना माल ही अच्छी ***'क्वालिटी'*** का माना जाता है।

यह लोग भी कभी कभी लालच में आकर गाय ज़िब्ह करने के लिये किसी गरीब मुस्लिम को छुरी चलाने पर उकसाने का कारण बन सकते हैं। इन्हें भी मजबूर करना होगा कि अपनी दौलत के बल पर गाय काटने के सिलसिले में किसी का साहस न बढ़ाएं और कोई अन्य कारोबार तलाश करें ताकि खुद हिन्दु धर्म के मानने वाले होते हुए गाय के मामले में अपने धर्म के खिलाफ़ काम न करें।

सीमाओं पर गाय बेचने वालों पर पाबंदी

(12) हज़ारों गायों के झुण्ड जो सड़कों पर घूमते फिरते हैं, इन गायों को भूखा प्यासा हांक कर जो व्यापारी हमारे मुल्क के सीमावर्ति इलाकों में ***नेपाल, पाकिस्तान, बर्मा और बंगलादेश*** वालों के हाथों सौ पचास रूपयों में बेच देते हैं और इसी कारण हमारे पड़ोसी देश के लोगों को इतने सस्ते दामों के जानवर खाने को मिल जाते हैं और उन का अनाज भी बच जाता है और हड्डी चमड़े की अलग कीमत वसूल कर लेते हैं। यह चीज़ हमारे देश की अर्थ व्यवस्था को नाश कर के अनाज की क़ीमतों को बढ़ा देती है। इस का कोई हल निकालने के लिये मिलजुल कर बैठना चाहिये। जहाँ तक मेरी जानकारी का सवाल है, हिन्दुस्तानी मुसलमान यह काम नहीं करते क्योंकि वे पहले ही से बदनाम हैं और डरे सहमे भी हैं। साहसी लोग ही खुले आम, ***बर्मा, पाकिस्तान, बंगलादेश*** और ***नेपाल*** की सीमा पर लाखों गाय पड़ोसी देश के हवाले कर आते हैं। इन लोगों के इस घिनौने काम को रोकने की कड़ी कार्यवाई होना चाहिये। जब

हम गाय को अपने मुल्क में ज़िब्ह करने पर पाबंदी लगाने जाएंगे तब क्या यह इंसाफ़ की बात होगी कि अपने देश की जनता को हम एक चीज़ न खाने दें और पराये देश के दरवाज़े पर जाकर यह खुराक सस्ते, बल्कि मुफ़्त में उन के हवाले करें? हमारे देश की गरीब जनता के लिये यह कोई इंसाफ की बात नहीं होगी अगर सीमावर्ति इलाक़ों से गाय की विदेशों में निकासी बंद न की जाएगी तो आर्थिक रूप से हमारे मुल्क की कमर टूट जाएगी। बहरहाल इस कारोबार को पूरी तरह बंद करने का प्रोग्राम सामने लाया जाना चाहिये।

गाय का मांस खाने वाले हिन्दुओं का बायकाट

(13) हिन्दु धर्म के पंडितों के लिये अनिवार्य है कि जो लोग हिन्दु हो कर भी गाय का गोश्त खाते हैं और हिन्दु मत पर होते हुए भी मुल्क के सीमावर्ति क्षेत्रों में लाखों की संख्या में विदेशों में गायों को कटने के लिये भेजते हैं, उन्हें ग़ैरत दिलाएं, सख़्ती से मना करें और उन पर पूरी पूरी रोक लगाएं। ऐसे लोगों को जो हिन्दु धर्म के मानने वाले होकर भी इस धर्म के विरूद्ध काम करते हैं उन्हें कपटाचारी, मक्कार और अविश्वसनीय मान कर समाज से निकाल देना चाहिये और उनका सामाजिक बायकाट होना चाहिये। यह धार्मिक कदम उठाना हिन्दु धर्म के ***विद्वानों, पंडितों और शंकराचार्यों*** की

ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी धार्मिक शक्ति का इस्तेमाल कर के गाय का गोश्त खाने के इस चलन व आचरण को, जो खुद हिन्दु भाईयों के बीच जारी है, पूरी ताक़त से रोकें और अगर हिन्दु धर्म में गऊ मास खाना वास्तव में पाप है तो गऊ मास खाने वाले हिन्दुओं के खिलाफ धर्मादेश देकर उन्हें हिन्दु धर्म से निकाल बाहर किये बग़ैर कोई चारा नहीं है।

मुस्लिम आलिमों की कार्य पद्धती को नमूना (आदर्श) बनाया जाए

(14) इस्लाम में जिन जानवरों का ***खाना हराम*** है मुस्लिम समाज में कोई मुसलमान उन जानवरों को नहीं खा सकता अगर कोई ऐसा अपराध करे तो उसे इस्लाम से बाहर निकालने का कानून है। यही वजह है कि मुस्लिम विद्वान हमेशा इस का ख़्याल रखते हैं कि मज़हबी लिहाज़ से जिन जानवरों का खाना मना है उन का इस्तेमाल करने वाले को समाज से निकाल देना चाहिये ताकि वह ***शादी, ब्याह, कफन, दफ़न*** और ***विरासत*** आदि से मजबूर होकर ***धर्मादेश*** के खिलाफ किसी ऐसे काम को करने की हिम्मत ही न कर सके। हिन्दु धर्म के आचार्यों के लिये अपने मुस्लिम भाईयों का यह नमूना बड़े काम का है। अगर इसी तरह इस नमूने को इस्तेमाल करके हिन्दु धर्माचार्य भी गाय का गोश्त खाने वाले हिन्दुओ को मज़हब से अलग करने की घोषणा करने

लगें तो गाय का गोश्त खाने की हिन्दु भाईयों की आदत खत्म हो जाएगी और आगे भविष्य में वे कभी ऐसी हिम्मत न कर सकेंगे।

अपने तरफ से मैं अपने हिन्दु भाईयों से साफ साफ कह देता हूँ कि इस देश में आप की मुहब्बत के हम भूखे हैं। हिन्दु धर्म में ***ममता, मेहरबानी, स्वभाव*** का ***भोलापन*** और दूसरों की सेवा की भावना आदर योग्य है, यहाँ तक कि जानवरों के साथ भी हिन्दु भाईयों का बरताव दया और रहम का है। इस लिहाज़ से अपने मुसलमान भाईयों के साथ, जो आप के भाई हैं, आप हक़ व इंसाफ की मांगों व इन्सानी रिश्तों और संबधों को कभी न भूलें और उन के सहयोग के लिये आप जब भी हाथ बढ़ाएंगे उस हाथ को हम अपने बडे भाइ का हाथ मान लेंगे और अपने सीने से लगा लेंगे। इंसानी दोस्ती के लिये बढ़ाया जाने वाला हाथ कभी खाली नहीं रहेगा।

तौहीद की दावत मुसलमानों पर फ़र्ज़

मुसलमान भी अपनी ओर से इस्लाम की दावते–तौहीद और पड़ोसियों का वह हिस्सा जो मुसलमानों पर कर्ज़ के रूप में अब तक बाकी हैं अपने हिन्दु भाईयों की सेवा में पेश करेंगे। हक़ लेने और हक़ देने तथा सच देने और सच लेने में इंसानी दिमाग को आज भी खोल लेना कुछ मुश्किल नहीं। एक सत्य प्रिय इंसान, एक सच्चे हिन्दुस्तानी और पूरी इन्सानी बिरादरी के एक हमदर्द के नाते मैं यह अपील करूंगा कि इस मसले को

किसी एक दल या गिरोह से कभी भी न जोड़ा जाए बल्कि हक़ व इंसाफ की दृष्टी से जिस जिस वर्ग का इस मसले से संबंध हो और जिस जिस गिरोह का जितना हिस्सा हो उन सब ही लोगों का सहयोग हासिल किया जाए और इस मामले में तंग नज़री से हरगिज़ काम न लिया जाए।

बड़े भाई का फर्ज़

अंत में मुझे प्यार, मुहब्बत और दिल की गहराईयों से कहने की इजाज़त दीजिए कि हिन्दु भाई हम से बड़े हैं। बड़े भाईयों का अदब व सम्मान हमारा फर्ज़ है और मुसलमान आप के छोटे भाई हैं छोटों के साथ मुरव्वत व सुविधा का मामला होना चाहिये। अल्प संख्यक और बहुसंख्यक जैसे शब्दों से ज़्यादा अच्छा मैं समझता हूँ कि हम एक दूसरे के भाई हैं। एक छोटा है जो संख्या में कम है और दूसरा बड़ा है जिस की संख्या ज़्यादा है। बड़ों की बड़ाई इसी में है कि वह छोटों के रक्षक बने रहें और छोटों की इज़्ज़त भी इसी में है कि अपने बड़े भाईयों की मान व मर्यादा को न भूलें।

अंतिम निवेदन

आपने मेरी बातों को बड़े सब्र व शांति से सुना इस पर मैं आप का आभारी हूँ और आप के दिये हुए प्यार और भरोसे की क़द्र करता हूँ और फिर एक बार इन्सानियत के नाम पर इंसान की हिफाज़त और इंसान की मुहब्बत आप से मांगता हूँ कि

किसी भी इंसान का दिल न दुखाया जाए और न उसे सताया जाए क्योंकि किसी एक जान को भी नाहक कत्ल करने पर पूरी इंसानियत का खून हमारे कांधों पर आ पड़ता है इसलिये इंसानियत को खून खराबे से बचाने के लिये हमें मिल जुल कर रहना चाहिये।

पवित्र कुरआन की आयत

पवित्र कुरआन की एक आयत पर अपनी तकरीर खत्म करता हूँ।

अल्लाह का इर्शाद है :

" जिस किसी ने भी क़िसी आदमी को खून के जुर्म के बिना या ज़मीन में फ़साद के जुर्म के बग़ैर नाहक कत्ल कर दिया तो उसने समस्त इंसानों को इकट्ठा कत्ल कर डालने का गुनाह किया और जिसने किसी एक इंसान की ज़िंदगी की हिफ़ाजत की मानो उसने पूरी इंसानियत को ज़िन्दगी देने की ज़मानत का नेक काम किया। ऐसा खुला हुआ अमन का पैग़ाम

लेकर हमारे रसूल उन के पास आते रहे, लेकिन इस के बाद भी बहुत से लोग दूसरे इंसानों पर हाथ डालकर इस धरती को इंसानी खून के छींटों से नापाक करके दहशत फैलाते हैं।"

(5:सूरह माईदा : 32)

पवित्र कुरआन की यह आयत उस मालिक का इर्शाद है जो सारे इंसानों का रब है और जिसका मार्ग दर्शन इस धरती के लिये आम है। सारे इंसानों का यह इंसानी फर्ज़ है कि वे इस उपदेश को दिल में जगह दें और दूसरों के दिल में उतारने का पूरा पूरा संघर्ष करें ताकि यह देश, अमन व शांति का गुलशन बन कर इस धरती के सभी इन्सानों के लिये आदर्श बन जाए।

इन्सानियत ज़िन्दाबाद !